बिहार में बाढ़ की समस्या एवं इसके रोकथाम के उपाय

Vishal
M.S.J. College

बाढ़ एक ऐसी प्राकृतिक आपदा है जिससे बिहार सर्वाधिक प्रभावित होता है। बिहार में प्रत्येक वर्ष बाढ़ अवश्य आती है, जो अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

भारत के संदर्भ में बिहार का प्राकृतिक उच्चावच, अपवाह तंत्र के साथ नदियों का जलग्रहण क्षेत्र तथा मानसूनी वर्षा की प्रकृति ऐसी है कि बाढ़ से बच पाना लगभग असंभव है। "राष्ट्रीय बाढ़ आयोग" के अनुसार देश का सर्वाधिक बाढ़ग्रस्त राज्य बिहार ही है। यहां के 38 जिलों में 33 जिले बाढ़ से प्रभावित हैं तथा पूरे बिहार के क्षेत्रफल का लगभग 76% बाढ़ग्रस्त है। उत्तरी बिहार के जिले बाढ़ से मुख्य रूप से प्रभावित हैं, जिसमें दरभंगा, वैशाली, गोपालगंज, दरभंगा, मधुबनी, पूर्णिया, सहरसा, कटिहार, खगड़िया, बेगुसराय मुख्य है। उत्तरी बिहार की नदियां घाघरा, बागमती, कोसी, कमलाबलान, महानंदा प्रत्येक वर्ष बाढ़ लाती है। दक्षिण बिहार में पटना, जहानाबाद जिले भी बाढ़ से प्रभावित होते हैं।

— बिहार में बाढ़ आने के कारण —:

1. हिमालयी क्षेत्र से निकलने वाली नदियों का जलग्रहण क्षेत्र वृहद है, जिसमें अपार जल राशि का जमाव हो जाता है।
2. कम समय में अधिक वर्षा के कारण जलराशि काफी बढ़ जाती है।
3. उत्तरी बिहार की सभी नदियाँ गंगा में मिलती है। वर्षा के समय गंगा का जलस्तर काफी ऊँचा रहता है। अतः सहायक नदियों का जल गंगा में प्रवाहित नहीं हो पाता। नतीजतन नदियों का जल क्षैतिज रूप से फैलकर बाढ़ लाता है।
4. अवसादों के निक्षेप के कारण अधिकांश नदियों का तल ~~ऊंचा~~ उथला हो गया है।
5. उत्तरी बिहार की नदियों में मार्ग परिवर्तन के कारण भी बाढ़ आती है।
6. हिमालय तथा द० पहाड़ के बीच गंगा-बेसिन की बनावट ऐसी है कि यहां से शीघ्र जल-निकासी संभव नहीं हो पाता, जबकि उत्तर व दक्षिण से आने वाली नदियां अपने जल को इसी बेसिन में जमा करती है।

Scanned with CamScanner

7. मैदानी भागों का भौमजलस्तर काफी ऊंचा है। इस कारण भूमि में जलस्राव कम होता है, जिससे धरातलीय जल लम्बे समय तक जमा रहता है।

8. तटबंधों के निर्माण के कारण भी बाढ़ प्रभावित क्षेत्रफल में वृद्धि हुई है। 1954 में बिहार में 160 km लम्बे तटबंध थे और बाढ़ प्रभावित क्षेत्रफल 25 लाख हे० था। वर्तमान में 3430 km. लम्बे तटबंध है, जबकि बाढ़ प्रभावित क्षेत्र बढ़कर 68 लाख हे० हो गया है।

9. तटबंधों के टूटने से भी अचानक बाढ़ आती है।

10. दो नदियों पर तटबंध बनने के बीच का 50-100 km क्षेत्र, जो कटोरानुमा आकार धारण कर लेता है, में पानी भरने के बाद पानी का निकलना मुश्किल हो जाता है। फलत: बाढ़ की अवधि लंबी हो जाती है।

- रोकथाम के प्रयास :-

बाढ़ एक प्राकृतिक आपदा है। इसे शत-प्रतिशत रोकना असंभव है। परंतु इससे होने वाली हानि को रोकने एवं बाढ़ का प्रभाव कम करने के उपाय किए जाते रहे हैं। 1954 में 'राष्ट्रीय बाढ़ नीति' लाई गयी। इसके तहत तटबंधों का निर्माण किया गया। हालाँकि तटबंध बाढ़ को रोकने में बहुत सहायक नहीं हो सके। वानिकी, मृदा-अपरदन को रोकना आदि कार्यक्रम भी किए जा रहे हैं। बाढ़ से निपटने के लिए वृहत प्रयासों की आवश्यकता है, जो निम्न रूपों में हो सकते हैं —

1. 'जलग्रहण क्षेत्र कार्यक्रम' — इसके लिए नेपाल सरकार से सहयोग लेना चाहिए। इसमें बंडिंग (Bunding), वनीकरण, समोच्च कृषि महत्वपूर्ण है।

2. नदियों से गाद/अवसाद हटाना आवश्यक है।

3. लघु नदी घाटी योजनाएँ बनाना

4. अपवाह चैनल योजना बनाना चाहिए ताकि जल एकत्रित

Scanned with CamScanner

न होकर अलग भागों में विभक्त हो सकें।

5. बाढ़ भविष्यवाणी को सुचारू रूप से क्रियान्वित करना।

6. फ्लड इकोलॉजी विकसित करना चाहिए जिसमें मत्स्य पालन, मखाना, सिंघाड़ा एवं अन्य जलीय कृषि है।

7. मकान ऐसे बनाए जाए जो बाढ़ को सह सकें।

बाढ़ से बचने के लिए एक स्थायी उपाय आवश्यक है। विशेषज्ञों तथा JNU के प्रोफेसरों द्वारा एक प्रस्ताव किया गया है, जो बाढ़ रोकने का एक स्थायी उपाय हो सकता है। प्रस्ताव के अनुसार नेपाल से समझौता कर बिहार-नेपाल की सीमा के साथ-साथ 20 से 25 m. चौड़ी तथा 5-10 m गहरा जलाशय का निर्माण किया जाए। ऊपर से आनेवाली नदियों का जल इसमें लाकर जल का पूर्ण नियमन किया जाए। जलाशय का उपयोग मत्स्य-पालन हेतु करना चाहिए एवं जलाशय के ऊपर सुपर हाईवे सड़क का निर्माण सीमा के साथ कर दिया जाए। इससे बिहार बाढ़ से मुक्त हो सकता है एवं अन्य विकासात्मक कार्य भी संभव हो सकेंगे।

Scanned with CamScanner

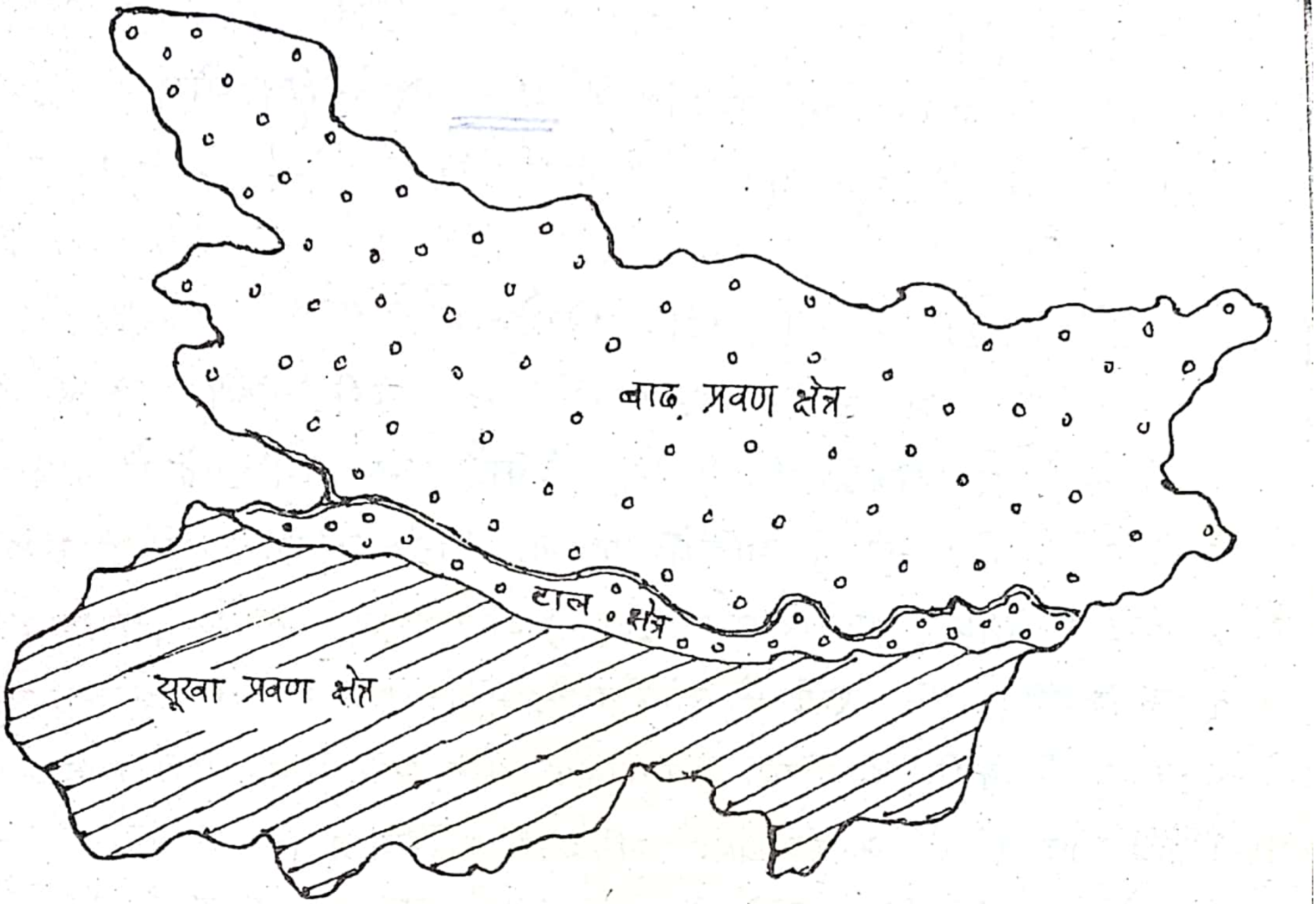

Scanned with CamScanner